## डॉ. श्रीनिवास मूर्ति

**शिक्षा :**
एम.ए., पी-एच. डी. (बेंगलुरु विश्वविद्यालय)

**अनुभव :**
स्नातक कक्षा का 22 वर्ष

**प्रकाशन :**
श्री लक्ष्मीकान्त वर्मा के कथा साहित्य में जनवादी चेतना, ऊहला ओडिलो (तेलुगु) और कविता तरंगलु (तेलुगु)

**शोध मार्गदर्शन :**
4 पी-एच. डी. उपाधि प्राप्त शोधार्थी

**सम्प्रति :**
सह आचार्य, कला, मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग, रेवा विश्वविद्यालय, बेंगलुरु

**ISBN : 978-93-95922-18-0**
**₹ 800.00**

मूल्य : आठ सौ रुपये मात्र


| | | |
|---|---|---|
| पुस्तक | : | महिला सशक्तिकरण में हिन्दी साहित्य का योगदान |
| सम्पादक | : | डॉ. माया सगरे- लक्का |
| प्रकाशक | : | **विकास प्रकाशन**<br>311 सी., विश्व बैंक, बर्रा, कानपुर- 208027 |
| संस्करण | : | प्रथम, 2023 ई. may |
| आवरण-सज्जा | : | छपाई घर, ब्रह्मनगर, कानपुर |
| शब्द-सज्जा | : | शुभी कम्प्यूटर, कानपुर |
| मुद्रक | : | छपाईघर, ब्रह्मनगर, कानपुर |
| मूल्य | : | 800/- |
| ISBN | : | 978-93-95922-18-0 |

12. हिंदी महिला साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान 86-91
स्मिता चतुर्वेदी
13. हिन्दी महिला साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान 92-97
डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन
14. नारी सबलीकरण को महिला कथाकारों का योगदान 98-103
डॉ. अनुपमा पी.ए.
15. 'साहित्यिकी' पत्रिका : महिला सशक्तिकरण के विशेष परिपेक्ष्य में 104-111
लिली साह
16. प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में महिलाओं की भूमिका 112-115
डॉ. माया सगरे- लक्का
17. सशक्तिकरण के राजनीतिक परिदृश्य में स्त्री 116-123
डॉ. अजय कुमार साव
18. श्रीलाल शुक्ल के उपन्यासों में चित्रित स्त्री-पुरुष का संबंध 124-129
डॉ. जी. वसंती
19. 'छिन्नमस्ता' उपन्यास में चित्रित नारी समस्या 130-133
प्रा. सिद्धाराम पाटील
20. आधुनिक हिन्दी उपन्यास में चित्रित स्त्री संघर्ष में पुरुष की भूमिका 134-138
सुस्मिता सेन
21. उषा प्रियवंदा के उपन्यास 'शेष यात्रा' में चित्रित नारी 139-143
डॉ. क्षितिजा
22. 'आपका बंटी' उपन्यास में स्थित नारी संघर्ष 144-148
डॉ. अश्विनी सचिन सदावर्ते
23. मैत्रेयी पुष्पा के चुनिंदा उपन्यासों में नारी शोषण एवं नारी सशक्तिकरण 149-153
अलका यादव
24. डॉ. शरद सिंह के पिछले पन्ने की औरतें में स्त्री विमर्श 154-158
प्रा. नयन भादुले-राजमाने

# 13

# हिन्दी महिला साहित्यकारों का हिन्दी साहित्य में योगदान

डॉ. पूर्णिमा श्रीनिवासन

हिंदी साहित्य में महिला साहित्यकारों का अप्रतिम योगदान आदिकाल से हमें देखने को मिलता है। आधुनिक युग में महिला साहित्यकारों ने कविता, कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र, संस्मरण आदि सभी विधाओं पर अपनी लेखनी चलाई है। वर्तमान युग के साहित्यकार, आम नारी के जीवन संघर्ष को कथावस्तु बनाकर हमें जीवन के विभिन्न प्रकार के संघर्षों का मर्मस्पर्शी चित्रण प्रस्तुत करने में सफल रहे। प्रेमचंद युग के उषा देवी मित्रा, कमला चौधरी, सुभद्रा कुमारी चौहान, उसके बाद रजनी पन्नीकर, कंचन लता सब्बरवाल, शांति मेहरोत्रा आदि का योगदान सराहनीय है। तत्पश्चात शशि प्रभा शास्त्री, शिवानी, कृष्णा सोबती, मन्नू भंडारी, उषा प्रियंवदा, ममता कालिया आदि का अनुपम योगदान स्तुत्य है। इस श्रृंखला में प्रमुख महिला कहानीकार एवं उपन्यासकार मन्नू भंडारी के योगदान के बारे में चंद विषय प्रस्तुत करना चाहती हूँ।

**मन्नू भंडारी- प्रख्यात आधुनिक कहानीकार एवं उपन्यासकार (समय 1931 2021)**

इनकी रचनाएँ पुरातन संस्कारों और रूढ़ियों से अपने सहज मन को सरलता से तोड़ लेती है। इनकी रचनाएँ अपने अनुभवों के आधार पर आधुनिक नारी की सामाजिक नीति व मानसिकता को बड़ी गहराई से उभारती है। उनका सृजन क्षेत्र अपने तीखे तेवर के कारण कई संभावनाओं से परिपूर्ण है। नैतिक संबंधों के बदलाव व उसमें पढ़ने वाले संबंधों की दरार को लेखिका ने अपनी विशिष्ट दृष्टि प्रदान की है। आधुनिक परिवेश में पुरुष के साथ बराबरी से कंधा मिलाकर चलना, पारिवारिक व सामाजिक मूल्यों में बदलाव के साथ-साथ, वैयक्तिक चेतना ने महिला साहित्य में एक नए स्वर का जन्म दिया है। महिला होने के बावजूद स्त्री-पुरुष संबंधों में जिस प्रामाणिकता और तटस्थता

का परिचय मन्नू भंडारी ने दिया, वह श्लाघनीय है। स्त्री होने के कारण नारी सुलभ भावनाओं की अभिव्यक्ति अनायास करती है।

उनकी रचनाओं में अभिव्यक्त पात्र व उनका जीवन चित्रण आधुनिक युग का यथार्थ मूल्यांकन है। आप नयी कहानी आंदोलन के दौर की महत्वपूर्ण एवं अग्रणी लेखिका हैं। पारिवारिक संबंधों की गहरी होती हुई दरारें, अंतर्द्वंद्व से उठता हुआ सैलाब, पात्रों की उठती गिरती मानसिकता, मन्नू भंडारी के कथा-साहित्य के सबसे महत्वपूर्ण एवं केंद्र बिंदु हैं। आप स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी साहित्य के विकास में नारी जीवन के मूक क्षणों को वाणी देने वाली सुप्रसिद्ध लेखिका है। आधुनिक कहानीकारों में आपका योगदान अप्रतिम व अद्वितीय है। साधारण विषयों को असाधारण दृष्टिकोण में प्रस्तुत करना आपकी विशिष्टता है। सरल बोधगम्य भाषा आपकी लेखन कला की विशिष्टता है। 'अकेली' आप की बहुचर्चित मनोवैज्ञानिक कहानी है। इस कहानी के द्वारा लेखिका एक अकेली स्त्री के मनोभावों का चित्रण करती है। कहानी के द्वारा लेखिका एक स्त्री के अकेलेपन तथा उसके जीवन जीने की आशा पर प्रकाश डालती है।

### 'अकेली' कहानी का कथासार

कहानी का जैसा शीर्षक है वैसा ही इसकी कथा भी है। कथा की नायिका सोमा बुआ, बूढ़ी परित्यक्ता, अकेली स्त्री है। वह पिछले 20 वर्षों से अकेली रहती है। उनका इकलौता जवान बेटा हरखू, समय से पहले ही चल बसा। पुत्र वियोग के सदमे के कारण सोमा बुआ के पति संन्यासी बनकर तीर्थवासी हो गए। साल में सिर्फ 1 महीने के लिए घर आते हैं। अतः सोमा बुआ को अपना जीवन पड़ोस वालों के भरोसे ही काटना पड़ता है। सोमा बुआ जो अकेली है, अपना मन बहलाने के लिए पड़ोस में जाकर उन्हें अपना मान कर, उनके साथ रहकर अपना जीवन काटती है। दूसरों के घर के सुख-दुख के सभी कार्यक्रमों में वह बिन बुलाए जाकर सारा काम करती है। अपने अकेलेपन को दूर करने का प्रयत्न करती है। जिन दिनों उनके पति आए हुए होते हैं, उसी समय बुआ के दूर के रिश्ते में किसी का ब्याह पड़ जाता है। बुआ के पति उन्हें यह निर्देश देते हैं कि जब तक रिश्तेदार के घर से न्योता ना आए बुआ वहाँ नहीं जाएँगी। इसी समय बुआ की विधवा ननद, बुआ से झूठ बोलती हैं कि निमंत्रण की लिस्ट में बुआ का नाम भी है। इसे सच मान कर बुआ खुश हो जाती हैं। ब्याह में भेंट देने के लिए अपने मृत पुत्र की अंतिम निशानी एक सोने की अँगूठी बेचकर, पड़ोसी राधा से चाँदी की सिंदूरदानी, साड़ी, ब्लाउज का इंतजाम करवाती है। बुआ अपने हाथों में लाल हरी चूड़ियाँ पहन कर, सफेद साड़ी, ब्लाउज का इंतजाम करवाती है। बुआ अपने हाथों में लाल हरी चूड़ियाँ पहन कर, सफेद साड़ी में पीले रंग मांड़ कर, 5:00 बजे के मुहूर्त के इंतजार करने लगती है। अंत में न्योता ना आने पर दुखी होकर टूट जाती है।